

## तीन ब्लेड। एक Gillette।

---

जो कुछ हम सचमुच रखते हैं — बिना शोर के, बिना चेतना के — किसी न किसी तरह आगे बढ़ता रहता है।

समय की तरह।

वह पूछता नहीं। वह चेताता नहीं।

वह आ जाता है।

उसका एक नाम है: नियति।

एक आदमी ने एक बार तय किया कि उसे याद रखा जाएगा।

स्थानीय रूप से नहीं। अस्थायी रूप से नहीं।

मानवता द्वारा।

उसके पास एक मौक़ा था।

अमेरिका में एक दोपहर, उसने ज़मीन से एक फेंका हुआ ब्लेड उठाया।

किसी और ने बोटल के ढक्कन का आविष्कार किया था।

उसने कुछ और देखा।

उसने किसी उत्पाद को बेहतर नहीं बनाया।

उसने एक इशारे को फिर से लिखा।

दाढ़ी बनाना एक प्रणाली बन गई।

ब्लेड डिस्पोज़ेबल बन गया।

नाम स्थायी बन गया।

जब लोग उत्पाद खरीदते,

वे उसका नाम बोलते।

किंग कैम्प जिलेट।

फ्रीमेसन।

द ह्यूमन ट्रिफ्ट, 1894 का लेखक।

मेरे पिता।

एक खनिक और एक कुलीन माँ के पुत्र।

सावधानी से पाले गए। बिना सीमाओं के बढ़े गए।

बारह साल की उम्र में, बड़े आदमी उनसे डरते थे।

इसलिए नहीं कि वे हिंसक थे —

बल्कि इसलिए कि वे हिचकिचाते नहीं थे।

एक रात, सिनेमा जाते हुए,

उन पर उनसे बड़े लड़कों के एक झुंड ने हमला कर दिया।

अकेले।

कोई रास्ता नहीं।

ज़मीन पर उन्हें एक रेज़र ब्लेड मिला।

उन्होंने उठाया।

उनमें से एक के चेहरे पर निशान डाल दिया।

वे भाग गए।

वह पल उन्हें कभी नहीं छोड़ता।

चौदह साल बाद:

120 उम्मीदवार।

एक जगह।

वे तीसरे स्थान पर रहे।

पहले दोनों ने सौदेबाड़ी की।

उन्होंने नहीं की।

वे जिलेट इटालिया में शामिल हुए।

और 40 साल रहे।

सेवानिवृत्ति के बाद, कुछ नहीं बदला।

लोग अब भी उन्हें सड़क पर रोकते।

अब भी उन्हें पहचानते।

नाम से नहीं।

वे जो प्रतिनिधित्व करते थे उससे।

फ्रेगा।

जिलेट का आदमी।

ब्लेड।

हर सोमवार वे जल्दी निकलते।

हर शुक्रवार वे लौटते।

कभी शिकायत नहीं की।

कभी समझाया नहीं।

वे मेरे पिता थे।

एक दिन, उन्होंने किसी से कहा कि मैं ही अकेला बेटा था जो सचमुच उनके जैसा दिखता था।

मुझे यह सालों बाद पता चला।

यही उनका तरीका था।

कोई घोषणाएं नहीं।

बस दिशा।

मैं 19 साल का था।

सैन्य सेवा।

पुलिस परीक्षा पास।

उन्होंने मुझसे मई 1985 में नेपल्स में मुलाकात की।

यह पिता-पुत्र की मुलाकात नहीं थी।

यह काम के बारे में नहीं था।

यह कुछ और था।

उन्होंने मुझसे एक सवाल पूछा:

“तुम अपनी ज़िंदगी का क्या करोगे?”

कोई दबाव नहीं।  
कोई सलाह नहीं।  
बस यही।  
मुझे सात दिन लगे।  
फिर मैं जिलेट से जुड़े एक संघ में शामिल हुआ।  
सबसे निचले संभव पद पर।  
आप नीचे से शुरू करते हैं  
अगर आपको शिखर देखना है।  
अठारह साल।  
मैं वहाँ पहुँचा।  
फिर कुछ ख़त्म हो गया।  
पैसा नहीं।  
पद नहीं।  
दिलचस्पी।  
तो मैं चला गया।  
उन्होंने मुझे फिर से देखा, निजी तौर पर।  
तब तक सेवानिवृत्त।  
उन्होंने मुझे रोकने की कोशिश नहीं की।  
कहा कि वे समझते हैं।  
हमेशा जानते थे कि यह होगा।  
क्योंकि मैं उनके जैसा था:  
अप्रत्याशित।  
हमेशा कुछ बेहतर की ओर गतिमान।  
30 नवंबर 2003।  
मैंने अपनी माँ जिलेट को छोड़ दिया।

पर डीएनए नहीं खोया।

तीन कहानियाँ।

तीन पल।

यह चौथी है।

1993 से फ्रीमेसनरी।

पाइथागोरस।

गूढ़ अनुशासन।

आप खुरदरा पत्थर लेते हैं

और उसे किसी चीज़ में बदल देते हैं जो भार सहती है।

मन तेज़ करता है

वह जो हृदय पोषित करता है।

मैं एक अंतरराष्ट्रीय प्रबंधक बना।

मैंने दुनिया घूमी।

और अठारह साल।

फिर, एक दिन,

मैंने लिखना शुरू किया।

एक किताब नहीं।

दो नहीं।

दस नहीं।

पचास नहीं।

सौ नहीं।

1600 से अधिक।

मैंने गिनना बंद कर दिया।

मैं पहचाना जाना चाहता हूँ।

पर किताबें बेचकर नहीं।

मैं पहुँच देता हूँ।  
व्यवस्था को नहीं पता मुझे कहाँ रखे।  
एक स्वतंत्र लेखक जो सब कुछ मुफ्त में देता है  
कोई श्रेणी नहीं।  
यह एक समस्या है।  
मैं व्यवस्था पर हमला नहीं करता।  
मैं बदतर करता हूँ।  
मैं उससे मूल्य निकाल लेता हूँ।  
वे मुझे पड़ते हैं।  
पर वे मुझे प्रबंधित नहीं कर पाते।  
वे मेरी क्रीमत नहीं लगा पाते।  
वे मुझे किसी साँचे में नहीं ढाल पाते।  
मुझे नियंत्रित नहीं किया जा सकता।  
मेरी कोई क्रीमत नहीं।  
क्योंकि मैं कुछ नहीं बेचता।  
नियति कभी प्रत्याशित नहीं होती।  
मेरी तरह।  
पर वह मौजूद है।  
क्योंकि वह वास्तविक है।  
और मैं अब भी उसकी दिशा में चल रहा हूँ।

---

नान्दो

Ferdinando Frega — [gillettenarrative.com](http://gillettenarrative.com)